(1)

प्राक्कथन

संसार के सभी धर्मों ने गुरू महिमा को एक स्वर से स्वीकार किया है और यथासंभव गुरू का सम्मान किया है। लेकिन गुरू महिमा को जितनी गहराई से कबीर पंथ में किया गया। वैदिक व सनातन धर्म में गुरू गीता नाम से ग्रन्थ में गुरूदेव को ब्रम्ह, विष्णु व महेश तथा उनसे भी बढ़कर साक्षात परब्रम्ह परमात्मा कहकर उनका वंदन किया गया है। लेकिन व्यावहारिक स्तर पर गुरू की परब्रम्ह परमात्मा कहकर उनका वंदन किया गया है लेकिन व्यावहारिक स्तर पर गुरू की परब्रम्ह परमात्मा के रूप में उपासना कम ही की गई है। इस कमी को पूरा किया है ''कबीर पंथ'' ने जिन्हें स्वयं सत्यपुरूष साक्षात गुरू के रूप में प्राप्त है।

सद्गुरू कबीर साहेब स्वयं सत्यपुरूष के ज्ञानी अंश के रूप में प्रगट होते है और धनी धर्मदास जी साहब के यहां स्वयं साक्षात सत्यपुरूष का रूप बताकर जिस उपासना पद्धति का प्रचलन किया उसमें गुरू भक्ति ही को प्रधानता दी गई। कबीर पंथ में इस गुरू भक्ति का न केवल विस्तार से वर्णन है बल्कि उसका व्यावहारिक स्तर पर प्रत्यक्ष रूप से दिग्दर्शन आज भी हमारे कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा में होता है। गुरू भक्ति के अंतर्गत गुरू से प्रीति गुरू के दर्शन, गुरू का वंदन, गुरू का पूजन, गुरू के समक्ष समर्पण, गुरू के चरणामृत गुरू का प्रसाद गुरू का आशीर्वाद, गुरू के उपदेश आदि प्रधान है।

लोग गुरू भक्ति का पूरा-पूरा लाभ उठा सके इसलिये वे प्रतिवर्ष नियमित रूप से पत्र अपने गुरू दरबार में **''संत समागम मेला''** में दामाखेड़ा पधारते ही है, साथ ही समय समय पर अपने प्यारे गुरूदेव को अपने-अपने निवास स्थानों को भी बुलाते हैं। भक्तों को समय-समय पर गुरू का उचित मार्गदर्शन मिलता ही रहता है। कबीर पंथी अपने जीवन में सदाचार सुमति का आचरण करते हुये सतत् गुरू भक्ति में निमग्न रहते हैं। इसके लिये सद्ग्रंथों का पठन-पाठन और संतों के सत्संग का आयोजन होता ही रहता है। अपने दैनिक जीवन में यह भक्ति सदा जागृत रहे

और अधिकाधिक बढ़ती रहे इसलिये कुछ व्रत भी धारण करते हैं, कुछ नियम भी लेते हैं जैसे प्रत्येक पूर्णिमा को गुरू के नाम का व्रत करना और पूरा दिन गुरू की याद में बिताना और रोज प्रातः तथा संध्या समय नियम से गुरू महिमा का पाठ और संध्या पाठ करा। इस पाठ से न केवल गुरू भक्ति दृढ़ होती है बल्कि परिवार के सदस्यों में, समाज व देश में शुभ संस्कारों का सींचन होता है और जिन्हें गुरूभक्ति का परिचय नहीं है उन्हें गुरूभक्ति को जाननें समझने व अंगीकार करने का अवसर प्राप्त होता है। कबीर पंथ में प्रत्येक कबीर पंथी नित्य नियम से प्रातःकाल गुरू महिमा का श्रद्धापूर्वक पाठ करता है।

जिस गुरू महिमा का पाठ नित्य नियम से किया जाता है वह स्वयं सद्गुरू कबीर साहेब के उपदेशों का ही अंश है। सद्गुरू कबीर साहेब के अनन्त अनन्त उपदेशों में से कुछ उपदेश कबीर पंथी धार्मिक ग्रंथों में संग्रहित है। उसके एक कबीर सागर नामक ग्यारह खंडों वाले वृहद ग्रंथ के दसवें खण्ड के बोध सागर नामक उपखण्ड में सुमिरन बोध के भी दूसरे भाग में गुरू महिमा का विस्तार से वर्णन आता है। संतों ने विवेकपूर्वक नित्यनियम के पाठ के लिये उसमें से एक छोटा अंतिम अंश निकालकर एक छोटी सी पुस्तिका का रूप दिया है, जिसे हम सभी ''श्री गुरू महिमा'' के नाम से जानते हैं और नित्य पाठ करते हैं।

मानव मन मननशील होने से अनेक प्रकार से प्रश्न किया करता है क्या-क्यों और गुरू भक्ति पर भी प्रश्न करता है- कि यह क्यों की जाय, कैसे की जाय, गुरू की क्या पहचान, शिष्य के क्या लक्षण इसी प्रकार की अनेक शंकाओं का समादान सद्गुरू कबीर साहेब ने इस ''गुरू महिमा'' में सुन्दर ढंग से किया है। जो भक्त श्रद्धापूर्वक इस गुरू महिमा का पाठ करता है, वह प्रत्यक्ष सत्यपुरूष का दर्शन पाता है और इसी जीवन में समस्त बंधनों से मुक्त होकर जीवन मुक्ति का लाभ प्राप्त कर लेता है। फिर गुरू भक्ति तो प्रेम का खजाना है बल्कि प्रेम की खेती है जो दिन दिन बढ़ती ही रहती है, जिसे पाकर भक्त परिपूर्ण परितृप्त हो जाता है।

इस गुरू महिमा की भाषा बिलकुल सरल और भाव सुस्पष्ट है और उसका श्रद्धा पूर्वक पठन ही पर्याप्त है। उसका शाब्दिक अर्थ करने की वास्तव में कोई जरुरत नहीं है और ऐसा करने से भाव प्रवाह खंडित होता है लेकिन मनन के दृष्टिकोण से और आत्मावलोकन की गरज से सतगुरू की इन वाणियों को भाषा टीका के रूप में प्रस्तुत की जाती रही है। उन्हीं प्रयासों में से एक प्रयास यह भी

है। भाव तो यही है कि सभी भक्तों की भक्ति भावना उत्कृष्ट एवं निष्कपट बने पर त्रुटि स्वाभाविक है। जिसके लिये क्षमा प्रार्थना के साथ गुरू महिमा पर टीका प्रारंभ करते हैं।

वंशघर के समस्त ग्रन्थों में संतों ने सद्गुरू कबीर साहेब उनके चारों युगों के स्वरूपों के नाम का, धनीधर्मदास जी साहेब के नाम का व उनके व्यालीस वंशों में से वर्तमान वंश तक का स्मरण बड़ी ही श्रद्धा पूर्वक किया है गुरू महिमा में भी अपने गुरू के विविध स्वरूपों का स्मरण सर्वप्रथम करते हैं। यथा- सत्यनाम सद्गुरू कबीर बंदीछोड़, सत्यनाम, सत्यसुकृत आदि अदली, अजर अचिंत, पुरूष मुनिन्द्र, करुणामय, कबीर सुरति योग संतायन धनी धर्मदास, चुरामणी नाम..... ।

●●

गुरु महिमा

निःसन्देह प्रातः स्मरणीय गुरु ही सत्यपुरूष के साकार चेतन स्वरूप है। इस तथ्य की साक्षी श्रुति, स्मृति, संत तथा विज्ञानविद् स्पष्ट रूप से देते आ रहे हैं। इसीलिए ही तो गुरु की महिमा अथवा श्रेष्ठता निर्विवाद है। सुमिरन या स्मरण अथवा पाठ की पद्धति अनादि काल से चली आ रही है। सुमिरन में वह शक्ति है कि किसी भी शब्द अथवा वाक्य को सुर्त लगाकर निरन्तर स्मरण करते रहने से उसका भाव अथवा स्वरूप पाठक के जीवन में उतरकर उसका साक्षात्कार हो जाता है, जो नैसर्गिक है। गुरु की महिमा अथवा श्रेष्ठता का सुमिरण ही एक प्रकार से सत्यपुरूष का भजन अथवा भक्ति साधना है। आत्मा का सत्यपुरूष से मिलन का एकमात्र उपाय ही गुरु महिमा का सुमिरन है। अतः प्रातः संधि अथवा प्रातःकाल के समय गुरु महिमा का पाठ गुरु भक्तों को अवश्य करना चाहिये।

पाठकों की सुविधा की दृष्टि से गुरु महिमा के प्रथम भाग का संक्षिप्त टीका प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है, कि इस प्रयास से पाठकों को अवश्य लाभ मिलेगा।

चौपाई-१

गुरु की शरना लीजै भाई। जाते जीव नरक नहिं जाई॥
गुरु मुख होय परम पद पावै। चौरासी में बहुरि न आवै॥
गुरु पद सेवे बिरला कोई। जापर कृपा साहब की होई॥
गुरु बिन मुक्ति न पावै भाई। नरक ऊर्ध्व मुख बासा पाई॥

जीवों के कल्याण का उपदेश देते हुये सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं- हे आत्मकल्याण के मुमुक्षुओं ! तुम गुरु की शरण ग्रहण करो। जिससे यह जीव नर्क में जानें से बच जाता है। जो व्यक्ति गुरूमुख हो जाता है वह परम पद को प्राप्त होकर दुबारा लख-चौरासी में नहीं आता। गुरु के चरणों की सेवा तो कोई बिरला

ही करता है, जिस पर स्वयं साहब सत्यपुरूष की कृपा हो जाती है। गुरु के बिना तो किसी को मुक्ति नहीं मिलती, वह तो नर्क में औधे मुंह गिरता है।

गुरु की कृपा कटै यम फांसी। बिलम न होय मिले अविनासी॥
गुरु बिन काहू न पाया ज्ञाना। ज्यों थोथा भुस छांड़ किसाना॥
गुरु महिमा शुकदेव जु पाई। चढ़ि विमान बैकुण्ठै जाई॥
गुरु बिन पढ़े जो वेद पुराना। ताको नहिं मिले भगवाना॥

गुरु की कृपा से यम की फांसी कट जाती है और शीघ्र ही अविनाशी साहेब का दीदार होता है। गुरु बिना कोई ज्ञान को प्राप्त नहीं होता, जैसे किसान भूसी छोड़ देता है। जब इस गुरु महिमा को मुनि शुकदेव नें पाया तभी उसका बैकुण्ठ में भी सम्मान हुआ। जो भी बिना गुरु के ही वेद पुरान आदि ग्रंथ पढ़ते हैं, उसे परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।

गुरु का सेवा जो करे सुभागा। माया मोह सकल भ्रम त्यागा॥
गुरु की नाव चढ़े जो प्राणी। खेइ उतारे सतगुरु ज्ञानी॥
तीरथ ब्रत देव और पूजा। गुरु बिन दाता और न दूजा॥
नवो नाथ चौरासी सिद्धा। गुरु को चरन सेव गोविन्दा॥

गुरु का सेवक बनकर वही सौभाग्यशाली है, जो सकल माया, मोह और भ्रान्तियों का त्याग कर देता है। जो भी गुरु खैवैया की नाव पर चढ़ जाता है उसे ज्ञानी सद्गुरु पार लगा देते हैं। तीरथ हो या व्रत हो, कोई देव हो या कोई पूजा हो, गुरु के बिना तो कोई वास्तविक दाता नहीं, जिन नौ नाथों और चौरासी सिद्धों की प्रतिष्ठा है तथा जिन्हें गोविन्द नाम परमात्मा कहा गया है, उन्होंने भी गुरु के चरणों की सेवा की है।

गुरु बिन प्रेत जन्म सो पावै। वर्ष सहस्त्र गर्भ मांहि रहावै॥
गुरु बिन दान पुण्य जो करहीं। मिथ्या होय कबहूं नहि फलहीं॥
गुरु बिन भ्रम ना भागे भाई। कोटि उपाय करै चतुराई॥
गुरु बिन होम यज्ञ जो साधे। औरो मन सत पातक बांधे॥

गुरु बिना तो जीव प्रेत योनी को प्राप्त होकर हजारों वर्षों तक गर्भवास का दुःख सहन करता है। निगुरा बिना गुरु के जो भी दान पुण्य करता है वह सब निष्फल ही जाता है। बिना गुरु के तो मन की भ्रान्ति मिटती ही नहीं, फिर चाहे कोई कितनी ही चतुराई क्यों न कर ले। जो गुरु के बिना ही हवन यज्ञ आदि करता है वह उल्टे कई पाप अपने सिर पर धरता है।

सतगुरु मिले तो अगम बतावै। यम की आँच ताहि नहिं आवै॥
गुरु के मिले कटे दुख पापा। जन्म जन्म के मिटे संतापा॥
गुरु के चरण सदा चित दीजै। जीवन जन्म सुफल कर लीजै॥
गुरु के चरन सदा चित जाना। क्यों भूले तुम चतुर सुजाना॥

जब सतगुरु मिल जाते हैं तो शिष्य को अगम की गम लखा देते हैं, ऐसे शिष्य को यमराज की आँच भी नहीं आती। गुरु के मिलने पर सारे दुःख और पाप कट जाते हैं, उस जीव के जन्म-जन्म के संताप मिट जाते हैं। हे प्राणी ! सदा ही अपने चित्त को गुरु के चरणों में लगाए रखो और इस प्रकार तुम अपना यह जीवन और जन्म सफल कर लो। हे सुजान ! गुरु चरणों में सदा ध्यान दो, तुम चतुर होकर भी क्यों चूक रहे हो।

गुरु भक्त मम आतम सोई। वाके हिरदे रहे समोई॥
गुरु मुख ज्ञान ले चेतो भाई। मानुष जनम बहुरि नहिं आई॥
सुख सम्पत्ति आपन नहिं प्राणी। समुझी देखि तुम निश्चय जानी॥
चौबीस रूप हरि आपहि धरिया। गुरु सेवा हरि आपहि करिया॥

जो गुरु की भक्ति करता है, वह तो मेरी अपनी आत्मा ही है, उसके हृदय में तो मैं ही समाया रहता हूँ। हे भाई ! गुरु मुख से ज्ञान प्राप्त कर चेत जाओ, फिर यह मानव जन्म दुबारा नहीं मिलेगा। इस संसार का सुख, यहाँ की संपत्ति, ये सब अपने नहीं है, यह बात समझ कर देखो और निश्चय करके जानो। जब विष्णु जी ने चौबिस अवतार धारण किये, तब-तब उन्होंने भी हर बार गुरु की सेवा की।

गुरु की निन्दा सुने जो काना। ताको निश्चय नरक निदाना॥
दसवां अंश गुरु को दीजै। जीवन जन्म सुफल करि लीजै॥
गुरु मुख प्राणी काहे न हूजै। हिरदय नाम सदा रस पीजै॥
गुरु सीढ़ी चढ़ि ऊपर पाई। सुख सागर में रहे समाई॥

अपने गुरु की जो व्यक्ति रूचि पूर्वक निन्दा सुनाता है, उसे निश्चित रूप से नर्क की प्राप्ति होती है। अपनी कमाई, समय, श्रम आदि का दसवा हिस्सा गुरु सेवा में अर्पित करना चाहिये और अपने जीवन इस जन्म को सफल कर लेना

चाहिये। गुरु मुखी बन जाने के बाद व्यक्ति को कभी गाफिल नहीं रहना चाहिये, बल्कि सदा ही हृदय से सत्यनाम का अमृतरस पीते रहना चाहिये। जो गुरु रूपी सीढ़ियों पर चढ़ जाता है वह सुख-सागर को प्राप्त कर लेता है।

अपने मुख जो निन्दा करई। शूकर श्वान जन्म सो धरई॥
निगुरा करै मुक्ति की आशा। कैसे पावे मुक्ति निवासा॥
औरो सुकृत देह जो पावै। सतगुरु बिना मुक्ति नहीं पावै॥
गौरी शंकर और गणेशा। सबहिन लीना गुरु उपदेशा॥

जो अपने ही मुख से गुरु की निन्दा करने का पाप करता है, उसे तो सुअर और कुत्ते का जन्म लेना पड़ता है। कोई निगुरा व्यक्ति मुक्ति की आशा करे, तो वह कैसे मुक्ति पा सकता है ? कोई यदि उत्तम देह भी धारण करे तो भी वो सतगुरु के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। देवी पार्वती, शंकर और गणपति जैसे देवों ने भी गुरु से उपदेश प्राप्त किया।

शिव विरचि गुरु सेवा कीन्हा। नारद दीक्षा ध्रुव को दीन्हा॥
सतगुरु मिले परम सुखदाई। जन्म जन्म का दुःख नसाई॥
जब गुरु किया अटल अविनासी। सुर नर मुनि सब सेव करासी॥
भवजल नदिया अगम अपारा। गुरु बिन कैसे उतरै पारा॥

शंकर व ब्रह्मा जी ने भी गुरु की सेवा की ध्रुव को भी नारद जी से दीक्षा प्राप्त हुई। जब परमसुख देने वाले गुरु मिल जाते हैं, तभी जन्म-जन्म के दुःख नष्ट हो जाते हैं। जब अटल अविनाशी रूप परमात्मा ने भी सर्वप्रथम गुरु को धारण किया तब पीछे-पीछे सभी देवता, मनुष्यों और ऋषि मुनियों ने भी गुरु के सेवा स्वीकार की। यह भवजल की नदी अगम, अपार है, उसे गुरु के बिना कैसे पार किया जा सकता है ?

गुरु बिन कैसे आतम जानै। सुख सागर कैसे पहिचानै॥
भक्ति पदारथ कैसे पावै। गुरु बिन कौन जो राह बतावै॥
गुरु मुख नामदेव रैदासा। गुरु महिमा उन्हूं परकाशा॥
तैंतीस कोटि देव त्रिपुरारी। गुरु बिन भूले सकल अचारी॥

गुरु के बिना कोई आत्म तत्व को कैसे जान पाएगा और सुख सागर की

पहचान कैसे होगी? साथ ही भक्ति जैसा अमूल्य पदार्थ कैसे प्राप्त होगा तथा गुरु के बिना कौन है जो राह बताएगा ? अर्थात कोई नहीं। देखिये नामदेव और रैदास जैसे भक्तों ने गुरुमुखी होकर गुरु महिमा को प्रकाशित किया। तैंतीस करोड़ देवता हो या त्रिपुरारी शिव शंकर हो, गुरु के बिना तो आचार्य बने हुये सभी भूले हुये हैं।

गुरु बिन भरमें लख चौरासी। जन्म अनेक नरक के वासी॥
गुरु बिनु पशु जन्म सो पावै। फिर फिर गर्भवास महं आवै॥
गुरु विमुख सोई दुख पावै। जन्म जन्म सोई डहकावै॥
गुरु सेवे सो चतुर सुजाना। गुरु पट तर कोई और न आना॥

बिना गुरु के जीव चौरासी लाख योनियों में भटकता फिरता है और अनेक जन्मों तक नर्कवास होता है। गुरु के बिना उसे पशु का जन्म प्राप्त होता है और फिर से गर्भवास में आना पड़ता है। जो गुरु से विमुख है वे ही अनेक दुःख पाते हैं और जन्म-जन्म तक भटकते फिरते हैं। जो गुरु की सेवा में लग जाता है, वही सच्चा चतुर सुजान है, क्योंकि गुरु के बराबरी का और कोई है ही नहीं।

गुरु की सेवा मुक्ति निज पावै। बहुरि न हंसा भव जग आवै॥
भव जल छूटन यहि उपाई। गुरु की सेवा करो सब भाई॥

गुरु की सेवा से मुक्ति की प्राप्ति होती है और वह सेवक फिर भवसागर में नहीं आता। इस भवबंधन से छूटने का बस ये ही एक उपाय है कि दौड़कर गुरु की सेवा में लग जाओ।

साखी– सतगुरु दीनदयाल है, देई मुक्ति का धाम।
मनसा वाचा कर्मणा, सुमिरो सतगुरु नाम॥
सत्य शब्द के पट तरे, देवे को कुछ नांहि।
कहा ले गुरु संतोषिये, हौंस रही मन मांहि॥
अति ऊंडा गहिरा घना, बुद्धिवन्त बहुधीर।
सो धोखा बिचले नहीं, सतगुरु मिले कबीर॥

सतगुरु तो दीनदयाल है। वे भक्तों को मुक्ति का धाम प्रदान करते हैं, इसलिये मन से, वचन से और कर्म से सतगुरु के नाम का स्मरण करो। जिस सत्य शब्द को गुरुदेव ने हमें प्रदान किया है उसके बदले में गुरु को भेंट करने के लिये हमारे

पास कुछ है ही नहीं। हम क्या लेकर गुरु सेवा में अर्पित करें, यह हौंस हमारे मन में ही रह गई। जो अपने भीतर अत्यंत गहीर गंभीर होते हैं, जो बुद्धिमान और बहुत धैर्यवान होते हैं, वे किसी अकल्पित धोखे में भी सत्यमार्ग से विचलित नहीं होते बस वही सद्गुरु को निश्चित रूप से प्राप्त हो जाते हैं।

चौपाई-२

गुरु देवन की महिमा बरनों। जय गुरुदेव तुम्हारी शरनों॥
गावत ही गुन पार न पावै। ब्रह्मा शंकर शेष गुन गावै॥
प्रथमहिं गुरु ऐसा जो कीन्हा। तारक मंत्र राम कहँ दीन्हा॥
माला तिलक दिया स्वरूपा। जाको बन्दे राजा भूपा॥

हम गुरुदेव की महिमा का वर्णन करना चाहते हैं। हे गुरुदेव! तुम्हारी जय हो, हम सदा आपकी शरण में हैं। गुरुदेव की महिमा का गान करते हुये उसका पार नहीं पाया जा सकता। ब्रह्मा, शंकर और शेषनाग भी गुरु का गुणगान करते हैं। हमने प्रारंभ में ही ऐसा गुरु किया जिन्होने भवतारक मंत्र ''राम'' दिया, जिन्होने हमें माला, तिलक सहित पूरा संत का स्वरूप प्रदान किया। इस संत भेष को राजा महाराजा भी वंदन करते हैं।

ज्ञानी गुरु उपदेश बतावा। दया धर्म की राह चिन्हाया॥
जीव दया घट ही में होई। जीव दया ब्रह्म है सोई॥
गुरु आधीन चेला बोलै। खरा शब्द गुरु अन्तर खोलै॥
खारा मिसरी बचन हि खमै। गुरु चरनों चेला नित रमै॥

ज्ञानी गुरु ने हमें सत्य का उपदेश दिया, दया धर्म का मार्ग बतलाया। जिस घट में जीव दया का भाव है, वहाँ ब्रह्म का निवास है। जो शिष्यत्व स्वीकार कर गुरु के आधीन रहता है, गुरुदेव उसके अंतरतम् को खोल देते हैं। गुरु के शरणागत होकर गुरु के कड़वे-मीठे वचनों को समता पूर्वक प्रसाद स्वरूप स्वीकार करना चाहिए। गुरु के चरणों में ही सदा रमना चाहिए।

भीतर हिरदय गुरु सो भले। ताके पीछे रामहि मिले॥
गुरु रीझै सो कीजै काम। ता पीछे रीझेगा राम॥

शिष्य सरस्वति गुरु यमुना अंगा। राम मिले सब सरिता गंगा॥
चेला गुरु में गुरु में राम। भक्ति महातम न्यारा नाम॥

जिसका हृदय गुरुदेव में रीझ जाता है, उसे ही साहेब की प्राप्ति होती है। शिष्य भाव धारण कर वो ही काम करो, जिससे गुरुदेव प्रसन्न हो। ऐसा करने पर एक दिन स्वयं साहब उस पर रीझ जाते हैं। इस भक्ति की त्रिवेणी में शिष्य सरस्वती रूप है, गुरुदेव जमुना रूप है, जब ये दोनों मिलकर परमात्मा में समा जाते हैं, तो ये तीनों गंगा नदी रूपी परमात्मा ही हो जाते हैं। इस प्रकार चेला गुरु में और गुरु प्रभु में लीन हो जाते हैं, ऐसी भक्ति की तो महिमा ही न्यारी है।

गुरु आज्ञा निर्वाहे नेमा। तब पावै सर्वज्ञी प्रेमा॥
सर्वज्ञी राम सकल घट सारा। है सबही में सबसे न्यारा॥
ऐसा जाने मन में रहै। खोजे बूझै ताको कहै॥
गुरु महिमा संक्षेपहि भनी। गुरु की महिमा अनन्त धनी॥

जब शिष्य श्रद्धा व निष्ठापूर्वक गुरु की आज्ञा का निर्वाह करता है, तब वह सर्वव्यापक प्रेम को प्राप्त हो जाता है। सबको जानने वाला राम (सत्यपुरूष) सब घटों में समान रूप से विद्यमान है। साथ ही वह सबमें होकर भी सबसे न्यारा है। ऐसा तत्व चिंतन कर अपने अन्दर स्थिर रहो और जो जिज्ञासु खोजबीन करे, उसे यह रहस्य बता दो। इस प्रकार गुरु महिमा बहुत थोड़े ही में कही, पर वास्तव में गुरु महिमा तो अनन्त गुनी है।

अवतार धरि हरि गुरु करै। गुरु किये तब नारद तरै॥
साख पुरातन ऐसी सुनी। बात हमारी गुरु सो बनी॥
कीड़ी जैसा मैं हूं दासा। पड़ा रहूं गुरु चरणों पासा॥
गुरु चरणों राखो बिश्वासा। गुरु ही पुरवे मन की आशा॥

विष्णु जी भी अवतार धारण कर गुरु की शरण लेते हैं। गुरु करने से ही नारद मुनि का भी कल्याण हुआ। पौराणिक साक्ष्य में भी यही सुना जाता है कि बिगड़ी बात केवल गुरु से ही बनती है। मैं तो नन्हा सा चींटी जैसा दास हूं, जो गुरु चरणों में पड़ा रहता हूँ। इस भाव के साथ गुरु चरणों में विश्वास रखो। गुरुदेव ही मन की आशा पूरी करने वाले हैं।

साखी– गुरु गोविंद अरू शिष्य मिलि, कीन्ह भक्ति विवेक।
तिरवेणी धारा बहे, आगे गंगा एक ।।
गुरु की महिमा अनन्त है, मोसो कही न जाय।
तन मन धन को सौंपिके, चरनो रहे समाय ।।

गुरुदेव, परमात्मा और शिष्य मिलकर भक्ति का जो विवेक करते हैं, वह त्रिवेणी में मिलने वाली तीन धाराओं के समान है, जो आगे चलकर एक गंगा रूप परमात्मा ही बन जाते हैं। गुरुदेव की महिमा तो अनन्त है, जिसका बखान मुझसे असंभव है, बस अपने तन मन धन सर्वस्व को अर्पित करके, गुरु के चरणों में समा जाओ।

चौपाई-३

गुरु सत पद जप अमृत वाणी। गुरु बिन मुक्ति नहीं रे प्राणी ।।
गुरु है आदि अंत के त्राता। गुरु है मुक्ति पद के दाता ।।
गुरु गंगा काशी ही स्थाना। चार वेद गुरु गम से जाना ।।
अड़सठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आवै। सो फल गुरु के चरनों पावै ।।

गुरु का पद सत्य है, उसका स्मरण करो, उनकी वाणी सत्य है, गुरु के बिना, हे प्राणी ! मुक्ति नहीं मिलेगी। गुरु तो आदि और अंत के रक्षक है, गुरु तो मुक्ति पद के दाता है। गुरु ही गंगा है, गुरु ही काशी है, चारों वेदों को गुरुगम से ही जाना जा सकता है। अड़सठ तीर्थों के भ्रमण का जो फल है, वह तो गुरु चरणों में ही प्राप्त हो जाता है।

गुरु को तजै भजै जो आना। ता पशुवा को फोकट ज्ञाना ।।
गुरु पारस परसै जो कोई। लोहा ते जीव कंचन होई ।।
शुक गुरु किये जनक वैदेही। वे भी गुरु के परम सनेही ।।
नारद गुरु प्रहलाद पढ़ाये। भक्ति हेतु जिन दर्शन पाये ।।

जो गुरु को छोड़ अन्य देवी-देवता आदि की उपासना करता है उस पशु का ज्ञान व्यर्थ है। जो गुरु रूपी पारस से छू जाता है वह लोह रूप जीव भी स्वर्ण रूप हंस बन जाता है। शुकदेव ने जिन जनक विदेही को गुरु बनाया वे भी अपने गुरु (श्री अष्टावक्र जी) से परम स्नेह करते थे। नारद मुनि जब प्रहलाद को शिक्षा दी तब उन्होंने भी भक्ति करके प्रभु के दर्शन पाए।

काग भुशंडी शम्भु गुरु कीन्हा। अगम निगम सबही कह दीन्हा ।।
ब्रह्मा गुरु अग्नि को कीन्हा। होम यज्ञ जिन आज्ञा दीन्हा ।।
वशिष्ठ मुनि गुरु किये रघुनाथा। पाये दर्शन भये सनाथा ।।
कृष्ण गये दुर्वासा शरना। पाये भक्ति जग तारन तरना ।।

काग भुसंडी ने शम्भु को गुरु बनाया जिन्होंने उसे अगम निगम का बोध करा दिया। ब्रह्माजी ने अग्नि को गुरु बनाया, जिन्होंने होम यज्ञ की आज्ञा दी। रामचन्द्र जी वशिष्ठ जी की शरण में गये जिससे न केवल वे सनाथ हुये बल्कि भगवान पद को प्राप्त हुये। श्रीकृष्ण जी दुर्वासा ऋषि की शरण में गये जिससे जगत से तारने तरने की भक्ति प्राप्ति हुई।

धीमर शिक्षा नारद पाये। चौरासी से तुरत बचाये।
गुरु कहै सोई है सांचा। बिन परिचय सेवक है कांचा ।।
गुरु समर्थ है सब के पारा। गुरु शरनन उतरे भव पारा ।।
कहहिं कबीर गुरु आप अकेला। दसों अवतार गुरु का चेला।।

नारद मुनि धीमर की शिक्षा पाकर चौरासी लाख योनियों से एक क्षण में छूट गये। वास्तव में वही सत्य है, जो गुरु बताते हैं, गुरु में ऐसे दृढ़ भाव के बिना सेवक अधूरा ही है। गुरु तो सर्वसमर्थ है, उनकी शरणागति से भवपार हो जाता है। सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं- हे गुरुदेव ! आप ही परिपूर्ण है, सर्वस्व है, ये दसों अवतार भी आपके चेले हैं।

साखी– राम कृष्ण से को बड़ा, उनहूं तो गुरु कीन्ह।
तीन लोक के वे धनी, गुरु आगे आधीन ।।
हरि सेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक।
ताके पटतर ना तुलै, सन्तन किया विवेक ।।

इन तीनों लोकों में स्वयं राम और कृष्ण रूप अवतारों से कौन बड़ा है फिर भी उन्होंने जन्म धारण कर गुरु की शरण ली। वे तो तीनों लोकों के स्वामी है, फिर भी देखो वे गुरु के आगे सदा आधीन है। परमात्मा की सेवा पूजा करते चार युग बीत जाये, उतना ही फल गुरु की निष्ठापूर्वक की गई मात्र एक क्षण की सेवा से प्राप्त हो जाता है। बल्कि सन्तों ने तो यह विवेक किया कि गुरु भक्ति के बराबर कुछ भी नहीं तुलता।

॥ इति गुरु महिमा सम्पूर्णम् ॥

●●

गुरु महिमा सटीक

(भाग-२)

हमारे देश में गुरु का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। गुरु से अलग होकर कोई भी कार्य संपन्न नहीं किया जाता है । भक्ति, ज्ञान तथा साधना के क्षेत्र में गुरु की अनिवार्यता मानी गई है, गुरु के बिना साधक आत्म-साक्षात्कार नहीं कर सकता । वह जीव, ब्रह्म के सात्विक रूप को नहीं जान सकता। अतः इस माया मोह रूपी भव सागर से पार नहीं हो सकता । प्रस्तुत है गुरु महिमा के दूसरे भाग का संक्षिप्त टीका-

दोहा- बन्दौं चरण सरोज गुरु, मुद मंगल आगार ।
जेहि सेवत नर होत है, भवसागर के पार ।।
गुरु के सुमिरन मात्र से, नाशत विघ्न अनन्त ।
तासे सर्वारम्भ में, ध्यावत हैं सब सन्त ।।

मैं गुरुदेव के चरण कमलों की वंदना करता हूँ, जो मेरे सब प्रकार से मंगलकर्ता है और जिनकी सेवा करने से नर भवसागर से पार उतर जाता है । गुरुदेव के स्मरण मात्र से अनन्त विघ्नों, बाधाओं का नाश हो जाता है । इसीलिये सभी संत सर्वप्रथम गुरुदेव का ध्यान करते हैं ।

चौपाई-१

गुरु गुरु कहि सब विश्व पुकारे । गुरु सोई जो भर्म निवारे।।
बहुत गुरु है अस जग मांही । हरे द्रव्य भव दुख कोउ नांहीं।।
तासे प्रथम परीक्षा कीजै । पीछे शिष्य ह्वै दीक्षा लीजै ।।
बिनु जाने जो कोई गुरु करहीं । सो नर भवसागर में परहीं ।।

यद्यपि गुरु की महिमा सब लोग गाते हैं, लेकिन गुरु तो वास्तव में वही है जो शिष्य की भ्रम भ्रान्तियों का निवारण कर दे । वैसे तो इस दुनिया में ऐसे गुरु भी बहुत है, जो शरणागत के द्रव्य का तो हरण कर लेते हैं, पर उसके भवदुःख को नहीं मिटा सकते । इसीलिये प्रथम गुरु की परीक्षा कर लेना चाहिये, पश्चात् शिष्य

बनकर दीक्षा लेना चाहिये । जो व्यक्ति बिना जाने ही किसी को भी गुरु बना लेता है, वह उल्टे भवसागर में ही डूब जाता है ।

पाखण्डी पापी अविचारी । नास्तिक कुटिल वृत्ति बकधारी।।
अभिमानी निन्दक शठ नटखट । दुराचार युत अबला लम्पट।।
क्रोधी क्रूर कुतर्क विवादी । लोभी समता रहित विषादी ।।
अस गुरु कबहुं भूलि न कीजै । इनको दूरहि से तजि दीजै ।।

जो पाखंडी हो, पापी हो, विचारहीन हो, नास्तिक हो, कुटिल हो, जिनकी बकवृत्ति हो, अभिमानी हो, निन्दक हो, शठ हो, नटखट हो, दुराचरण युक्त हो, अबला लंपट हो, क्रोधी हो, क्रूर हो, कुतर्क करने वाला और विवादी हो, लोभी हो, समभाव से रहित पक्षपाती हो और जो विवादग्रस्त हो, ऐसे गुरु बनकर आए हुये किसी व्यक्ति को भूलकर भी गुरु नहीं बनाना चाहिये । उसे तो दूर से ही त्याग देना चाहिये ।

निगमागम रहस्य के ज्ञाता । निस्पृह हित अनुशासन दाता ।।
दया, क्षमा, संतोष संयुक्ता । परम विचारवान भव मुक्ता ।।
लोभ मोह मद, मत्सर आदी । रहित सदा परमारथ वादी ।।
राग, द्वेष दुख द्वन्द, निवारी । रहे अखण्ड सत्य व्रत धारी ।।
भ्रद्र वेश मुद्रा अति सुन्दर । गति अपार मति धर्म धुरन्धर ।।
कृपया भक्तन पर कर प्रीति । यथा शास्त्र सिखवे शुभ नीति।।

इसके विपरीत जो अगम निगम के रहस्यों को जानने वाले हों, बिना स्वार्थ के अपना हित करने वाले हों, और अनुशासन देने वाले हों, जो दयालु, क्षमावान और संतोषी हों, जो परम विचारवान हो और स्वयं भवबंधनों से मुक्त हों, जो लोभ, मोह, मद व मत्सर आदि दुर्गुणों से रहित होकर सतत् परमार्थ में रत हों, जो राग-द्वेष, दुःख और द्वंद को मिटाकर अखण्ड सत्यव्रत को धारण किये हुये हो, जिसकी वेशभूषा सभ्य और स्वरूप सुन्दर हो, जो गहरी समझ वाले और मती के धीर हो और जो भक्तों पर प्रीति रखने वाले हों, ऐसे परम कृपालु गुरुदेव की शरण ग्रहण कर लेनी चाहिये, ये ही नीति सभी शास्त्र सिखाते हैं ।

दोहा- जिनके स्वप्नेहु क्रोध उर, कबहु न होत प्रवेश ।
मधुर वचन कहि प्रीतियुत, हेत सबहिं उपदेश ।।

जिनके स्वप्न में भी कभी क्रोध प्रवेश न करता हो, और जो मधुर वचनों से सभी शिष्यों को प्रेम पूर्वक सत्य का उपदेश देते हों। ऐसे गुरु को धारण करना चाहिये।

चौपाई-२

हरे अबोध बोध प्रद जन के । नाशे अशेष क्लेश जीवन के ॥
कृत्याकृत्य विकृत्य कर्म को । न्यायान्याय अधर्म धर्म को ॥
विविध भांति निश्चय करवाई । भिन्न भिन्न सब भेद लखाई ॥
सत मिथ्या वस्तु परखावे । सुगति कुगति मारग दरसावे ॥
तेहि गुरु की शरनागति लीजै । तन, मन, धन सब अर्पण कीजै ॥

जो सुपात्र लोगों के अज्ञान को हर लेते हों, जो दुःखदाई क्लेषों का नाश कर देते हों, जो कर्म, अकर्म, विकर्म, न्याय-अन्याय धर्म-अधर्म आदि विविध तरीकों से निश्चय करवा कर सबके भेद बताने वाले हों, जो सत्य और मिथ्या की परीक्षा देने वाले हों, जो भले और बुरे मार्ग की पहचान कराने वाले हों, केवल उन्हीं की शरणागति लेना चाहिये। ऐसे गुरु की शरण में जाकर उन्हें अपना तन-मन-धन सब कुछ अर्पण कर देना चाहिये।

असन बसन बाहन अरू भूषण । सुत दारा निज परिचारक गण ॥
करि सब भेंट गुरु के आगे । भक्ति भाव उर में अनुरागे ॥
तन यात्रा निर्वाह के कारण । मांगे देय सो कीजै धारण ॥
लै भिक्षुक सम दीन भाव मन । करे प्रणाम दण्डवत चरनन ॥
महायज्ञ को फल वह पावै । सुकृत बन्दि गुरु शीष नवावै ॥

उनके आसन की निवास की, आने जाने के साधन की और वस्त्राभूषण की समुचित व्यवस्था कर देनी चाहिये। अपने पुत्र-पत्नि, नौकर-चाकर आदि सब को गुरु सेवा में समर्पित करके, अपने हृदय में भक्ति भाव का अनुराग बढ़ाना चाहिये। गुरुदेव की जरूरतों को मांगने पर पूरा करना चाहिये और गुरुदेव के समक्ष भिक्षुक के समान दीन भाव धारण कर गुरु चरणों में दण्डवत प्रणाम करना चाहिये। इस प्रकार गुरु की वंदना करने वाला महायज्ञ का फल प्राप्त कर लेता है।

दोहा- यह विधि गुरु के शरण है, करे निरंतर सेव ।
गुरु सम जाने और नहिं, त्रिभुवन में कोई देव ॥

शिष्य को चाहिये कि इस प्रकार गुरु की शरण ग्रहण कर वह निरन्तर गुरु सेवा में तत्पर रहे और तीनों लोगों में गुरुदेव से बढ़कर और किसी देवी-देवता को न माने।

चौपाई-३

जिन गुरु को मानुष करि जाने । तिन सब को निर्भाग्य अयाने॥
बुद्धि रहित नर पशु समाना । है प्रत्यक्ष बिन पुच्छ विषाना ॥
विश्व विदित विशेष प्रभुताई । गोंविन्द से गुरु की है भाई ॥
गोविन्द की मायावश प्राणी । भुगते दुख चौरासी खानी ॥

जो गुरु धारण करके भी गुरु को महज एक मनुष्य ही समझता है, उनके जैसा अभागा और कौन होगा। ऐसा बुद्धि रहित मनुष्य वास्तव में पशु तुल्य ही है जिसके केवल पूंछ नहीं है। गोविन्द से भी गुरु की विशेष प्रभुता तो जगत विदित है, जहाँ एक तरफ गोविन्द की माया के वस में पड़कर संसार के प्राणी चौरासी लाख योनियाँ भोग रहे हैं वही दूसरी तरफ गुरु प्रताप से उनके भव का समूल विनाश हो जाता है।

गुरु प्रताप भव मूल विनाशे । विमल बुद्धि हवै ज्ञान प्रकाशे॥
सुख अखण्ड नर भोगे जाई । सत्य लोक में बासा पाई ॥
गुरु से श्रेष्ठ और जग मांही । हरि विरंचि शंकर कोउ नाहीं ॥
सुहृद बन्धु सुत पितु पितु महतारी । गुरु सब को दूजा हितकारी॥

गुरु कृपा से बुद्धि निर्मल हो जाती है और उसमें ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। वह गुरु भक्त सत्य लोक पहुंचकर अखण्ड सुख को प्राप्त होता है। इस जगत में गुरु से श्रेष्ठ स्वयं ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी नहीं है और हमारे सभी शुभचिंतक भाई, पुत्र पिता, माता आदि कोई भी गुरु के समान हितकारी नहीं है।

दोहा- जिनके रक्षक गुरु धनी, सके काह करि ओर ।
हरि रूठे गुरु शरण है, गुरु रूठे नहिं ठौर ॥

स्वयं गुरु धनी जिसके रक्षक हों, उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है। यदि एक बार परमात्मा भी रूठ जाय तो गुरु शरण में उद्धार है पर यदि गुरु ही रूठ जाय तो उस जीव का कहीं भी ठौर-ठिकाना नहीं है।

चौपाई-४

योग यज्ञ जप तप व्यवहारा । नेम, धर्म, संयम, अचारा ।
वेद पुराण कहैं गोहराई । गुरु बिन सब निष्फल है भाई ॥
गुरु बिन हृदय शुद्ध नहिं होई । कोटि उपाय करे जो कोई ॥
गुरु बिन ज्ञान विचार न आवै । गुरु बिन कोई न मुक्तिहि पावै ॥
गुरु बिन भूत प्रेत तन धारी । भ्रमे सहस्त्र वर्ष नर नारी ॥

वेद पुराण आदि ग्रंथ पुकार के कहते हैं कि योग, यज्ञ, जप, तप, नियम, संयम, धर्म, आचार आदि सब व्यवहार गुरु आज्ञा के बिना निष्फल है । गुरु के बिना हृदय शुद्ध नहीं होता, चाहे कोई कोटि उपाय करले । गुरु बिना ज्ञान विचार नहीं आता, गुरु बिना कोई मुक्ति नहीं पाता । गुरु के बिन तो नर-नारी भूत-प्रेतादि शरीर धारण कर हजारों वर्षों तक भटकते फिरते हैं ।

गुरु बिन यम के हाथ बिकाई । पाय दुसह दुख मग पछताई ॥
गुरु बिन संशय कौन निवारे । हृदय विवेक कौन विधि धारै॥
गुरु बिन नहिं अज्ञान विनाशे । नहिं निज आतम रूप प्रकाशे ॥
गुरु बिन ब्रह्म ज्ञान जो गावै । सो नहिं मुक्ति पदारथ पावै ॥
तेहि कारण निश्चय गुरु कीजै । सुर दुर्लभ तन खोय न दीजै ॥

गुरु बिना प्राणी यमराज के हाथों बिकते हैं और असह्य दुःख भोगते हुये मन में पश्चाताप करते हैं । गुरु बिना संशयों का निवारण कौन करेगा और गुरु बिना हृदय में विवेक कैसे जगेगा ? न ही गुरु बिना अज्ञान का नाश होगा, न ही निज आत्म स्वरूप का प्रकाश होगा । जो बिना गुरु के ही ब्रह्म ज्ञान का कथन करता है, वो मुक्ति पदार्थ नहीं पा सकता । इसीलिये प्रत्येक मनुष्य को निश्चित रूप से गुरु शरण में जाना चाहिये और इस देव दुर्लभ मानव तन को निगुरा रह कर व्यर्थ ही नहीं खो देना चाहिये ।

दोहा- वेद शास्त्र अरू भागवत, गीता पढ़े जो कोय ।
तीन काल संतुष्ट मन, बिन गुरु कृपा न होय ॥

कोई अपने मन से वेद, शास्त्र भागवत या गीता भले ही पढ़ ले परन्तु बिना गुरु कृपा के उसके मन में सच्ची संतुष्टी तीनों काल में नहीं आ सकती ।

चौपाई-५

अखिल विबुध जग में अधिकारी । व्यास वशिष्ठ महान अचारी ॥
गौतम कपि कणाद पतंजलि । जैमुनि बाल्मीक चरणन बलि ॥
ये सब गुरु के शरण में आये । तासे जग से श्रेष्ठ कहाये ॥
याज्ञवल्क्य अरू जनक विदेही । दत्तात्रेय गुरु परम सनेही ॥
चौबीस गुरु कीन्हें जग मांही । अहंकार उर राख्यो नाही ॥

जितने भी ज्ञानी व अधिकारी पुरूष संसार में हुये हैं जैसे वेद व्यास, महान आचार्य वशिष्ठ मुनि, गौतम ऋषि, कपिल मुनि, कणाद ऋषि, पातंजलि, जैमुनि, वाल्मिकी ऋषि ये सब तो गुरु शरण में आए और इसीलिये जग में श्रेष्ठ कहलाये। याज्ञवल्क्य, जनक वैदेहि, दत्तात्रय ये सब गुरु के परम स्नेही थे । चौबीस गुरु धारण किये तथा मन में रत्तीभर भी अहंकार नहीं रखा ।

अम्बरीष प्रहलाद विभीषन । इत्यादिक जो भये भक्त जन ॥
औरहु यती तपी वनवासी । ये सब गुरु के परम उपासी ॥
हरि विरंचि शिव दीक्षा लीन्हा । नारद धीमर को गुरु कीन्हा ॥
सन्त महन्त साधु हैं जेते । गुरु पद पंकज सेवहिं तेते ॥
शेष सहस्त्र मुख बहुगुण गावे । गुरु महिमा को पार न पावे ॥

अम्बरीष राजा, प्रहलाद, विभीषण आदि जो भक्त हुये और भी जितने यती, तपस्वी, बनवासी हुये वे सब गुरु के परम भक्त हुये ब्रह्मा, विष्णु, महेश गुरुमुखी हुये, नारद ने धीमर को गुरु बनाया । आज जितने भी सन्त, महन्त और साधु है, वे सब गुरु चरण कमल की सेवा करने वाले ही है । शेषनाग अपने हजारों फनों से गुरु गुण गाते थक जाते हैं पर गुरु महिमा का पार वे भी नहीं पाते ।

दोहा- राम कृष्ण से को बड़ा, उनहूँ तो गुरु कीन्ह ।
तीन लोक के वे धनी, गुरु आगे आधीन ॥

तीनों लोकों के स्वामी राम और कृष्ण से तो कोई बड़ा नहीं है, वे भी गुरु शरण लेकर सदा गुरु के आगे आधीन रहते थे ।

चौपाई-६

तप विद्या को करि अभिमाना । पाये लक्ष्मी सम्पत्ति नाना ।
जो नहीं गुरु को मस्तक नावै । सो नर अजगर को तन पावै ॥
निज मुख जो गुरु निन्दा करहीं । कल्प सहस्त्र नरक में परहीं ॥
गुरु की निन्दा सुने जो कोई । राक्षस श्वान जन्म तेहि होई ॥

जो तप और विद्या के बल से बहुत संपत्ति पाकर अभिमानी हुये हैं और गुरु चरणों में मस्तक भी नहीं झुकाते, वे आगे चलकर अजगर की देह पाते हैं। जो अपने मुख से गुरु की निन्दा करते हैं, वे हजारों कल्पों तक नर्क में पड़ते हैं। जो गुरु निन्दा सुनते हैं वे गधे और कुत्ते का जन्म पाते हैं।

गुरु से अहंकार उर धारी । करे विवाद मूढ़ अविचारी ॥
ते नर मरु निर्जल बन जाई । तृषित मरे राक्षस तन पाई ॥
जो गुरु को तजि औरहि ध्यावै । होय दरिद्री अति दुःख पावै ॥
बिन दरशन नहीं गुरु के रहिये । यह दृढ़ नियम हृदय में गहिये ॥

जो गुरु से ही अहंकार पूर्वक विवाद करते हैं ऐसे मूढ़ अविचारी निर्जल मरुस्थल में राक्षस तन पाकर प्यास से तड़प-तड़पकर मरते हैं। जो सच्चे गुरु का त्याग कर स्वार्थवस अन्य देवी-देवता की उपासना शुरू कर देते हैं, वे दरिद्रता को प्राप्त होकर अत्यन्त दुःख पाते हैं। गुरु भक्त को चाहिये कि वो बिना गुरु दर्शन किये एक पल भी न रहे।

जो बिन दरशन करे अहारा । होय व्याधि तन विविध प्रकारा ॥
यथा शक्ति जन चूके नाहीं । होय अशक्त दोष नहिं ताहीं ॥
गुरु सम्मुख नहिं बैठे जाई । खाली हाथ हिलावत आई ॥
जो कुछ और नहीं बनि आवै । पत्र पुष्प फल भेंट चढ़ावै ॥

नित्य गुरु दर्शन करन का तो नियम ही बना ले। जो बिना ही गुरु दर्शनों के भोजन कर लेता है उसके शरीर में नाना प्रकार की व्याधियां हो जाती है। शक्ति भर भक्त को गुरु दर्शन से नहीं चूकना चाहिये, फिर यदि वह असमर्थ ही हो तो यह उसका दोष नहीं है। गुरु के सन्मुख दर्शनों के लिये जाते समय खाली हाथ हिलाते हुये नहीं जाना चाहिए, यदि कुछ और न बन सके तो पत्र पुष्प, फल आदि कुछ भी भेंट चढ़ाना चाहिये।

दोहा- नम्र भाव अति प्रीतियुत, चरण कमल शिर नाय।
जो सतगुरु आज्ञा करै, लीजे शीश चढ़ाय ॥

अत्यन्त प्रेमभाव से नम्रता पूर्वक गुरु के चरण कमलों में अपना सर झुकाकर वंदन करना चाहिये और सतगुरु जो भी आज्ञा करे, उसे अविलंब शिरोधार्य करना चाहिये।

चौपाई-७

अति अधीन होय बोले बानी । रंक समान जोरी युग पानी ॥
कबहूं न बैठे दाव पसारी । जंघा पद धरि आसनमारी ॥
सम्मुख होय के गमन कीजे । गुरु छाया पर पांव न दीजे ॥
गुप्त बात किंचित नहिं राखे । करि छल कपट न मिथ्या भाखे॥

एक रंक के समान दोनों हाथ जोड़कर अत्यंत आधीनता पूर्वक वाणी का उच्चारण करना चाहिये। गुरु के सामने पैर पसार कर नहीं बैठना चाहिये, बल्कि पैरों को समेट कर सुखासन पर बैठना चाहिये। गुरुदेव के आगे आगे नहीं चलना चाहिये, गुरु छाँया पर पाँव नहीं रखना चाहिये। गुरु से कोई बात छुपा कर नहीं रखना चाहिये और न ही छल कपट युक्त मिथ्या वचन बोलना चाहिये।

वेद मन्त्र सम कहना माने । गुरु को परमातम सम जाने ॥
सत्यासत्य विचार न कीजे । गुरु को कथन मानि सब लीजे॥
जो कुछ श्रेष्ठ पदारथ पावे । सो गुरु चरणन आनि चढ़ावे ॥
गुरु की अद्भूत है प्रभुताई । मिले सहस्त्र गुना होय आई ॥

वेद मंत्रों के समान गुरु वचनों को मानना चाहिये और गुरु को प्रत्यक्ष परमात्मा ही मानना चाहिये। जो कुछ श्रेष्ठ पदार्थ प्राप्त हो उसे गुरु चरणों में अर्पित करना चाहिये। गुरु की ऐसी अद्भुत प्रभुता है कि अर्पण किया हुआ पदार्थ अनन्त गुना होकर उसे वापस मिल जाता है।

किये यथा विधि गुरु की पूजा । शेष रहे कर्तव्य न दूजा ॥
प्रबल पाप नाशे सब तन के । होय मनोरथ पूरन मन के ॥
जो गुरु को भोजन करवावे । मानो त्रिलोकहि न्योत जिमावे॥

इस प्रकार विधिपूर्वक गुरु की पूजा कर लेने पर शिष्य का कोई कर्त्तव्य शेष नहीं रहता। उसके शरीर के प्रबल पाप नष्ट हो जाते हैं और सारे मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। गुरु को भोजन कराने वाला तो तीनों लोक को न्योत जिमाता है।

दोहा- गुरु की महिमा अमिट है, करि न सके श्रुति शेष।
जिनकी कृपा कटाक्ष से, रंकहु होत नरेश ॥

गुरु की महिमा तो अमृत के समान है जिसे श्रुति व शेष भी बखान नहीं कर सकते। गुरु की कृपा कटाक्ष से ही रंक भी राजा बन जाता है।

चौपाई-८

अस प्रभाव है दूसर के हिमा। जस कछु है सतगुरु की महिमा ॥
सर्व सिद्धि प्रद अति वर दायक। दुख संकट में परम सहायक ॥
निज उठि पाठ करे जो कोई। सकल पाप क्षय ताके होई ॥
चित चिन्ता सन्ताप विनाशे। सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य प्रकाशे ॥
महा व्याधि ज्वर आदि निवारी। देय अकाल मृत्यु भय टारी ॥

ऐसा प्रभाव और किसमे है जैसा कुछ सतगुरु महिमा में है। यह गुरु महिमा सब सिद्धियों को देने वाली, अनेक वरदान देने वाली और दुःख संकट के समय परम सहायता करने वाली है। इस गुरु महिमा का जो भक्त नित्य उठकर नियम से पाठ करता है, उसके सारे पाप क्षय हो जाते हैं, उसके चित्त की चिन्ताएँ व सन्ताप नष्ट हो जाते हैं और सुख सम्पत्ति व ऐश्वर्य प्रगट हो जाते हैं। महा व्याधियाँ, ज्वर आदि दूर हो जाते हैं और उसका अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता।

लहे सकल सुख जे जग केरे। कबहुँ दरिद्र न आवे नेरे ॥
होय अलभ्य लाभ मारग में। पावे मान प्रतिष्ठा जग में ॥
परम मन्त्र यह अखिल फलप्रद। हरण सकल भव जन्म मरण गद ॥
श्रद्धावान भक्त लखि लीजे। ताको यह गुरु महिमा दीजे ॥
परम रहस्य गूढ़ यही जानी। कहे न सबहिं प्रसिद्ध बखानी ॥

जगत के सारे सुख उसे प्राप्त होते हैं, दरिद्रता तो पास भी नहीं आती। राह चलते अलभ्य लाभ होते हैं, जगत में सम्मान प्रतिष्ठा होती है। यह गुरु महिमा समस्त फलों को देने वाला परम मंत्र है, जो जन्म-मृत्यु रूप भव को ही मिटा देता है। श्रद्धावान भक्त को यह गुरु महिमा अवश्य बतानी चाहिये पर इसे परम रहस्य जानकर हर कहीं बखान करते नहीं फिरना चाहिये।

दोहा- धन्य मातु पितु धन्य हैं, धन्य सुहृदय अनुरक्त।
धन्य ग्राम वह जानिये, जहँ जन्में गुरु भक्त ॥
भक्ति प्रभाव मिटी सकल, धर्मदास के पीर।
कोटि जन्म के पुण्य से, सतगुरु मिले कबीर ॥

वह माता धन्य है, वह पिता भी धन्य है और उसकी वह संतान भी धन्य है, जो सुहृदय और अनुरागी है। वह ग्राम भी धन्य है, जहाँ ऐसे गुरु भक्त जन्म लेते हैं। भक्ति ही के प्रभाव से धनी धर्मदास जी साहेब की सभी पीड़ाएँ मिट गईं और कोटि जन्मों के पुण्यों के उदय होने से सद्गुरु कबीर साहेब जैसे समर्थ गुरु की प्राप्ति हो गई।

॥ इति श्री गुरु महिमा भाषा टीका सम्पूर्णम् ॥

●●